खण्ड-13, अंक-1, वर्ष-2025, मु0प्र0 27-31
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v13i1.5
SJIF (2025) : 8.749

शोध पत्र

Social Intelligence and Innovation Capacity of Primary Teachers in the Context of National Education Policy 2020: A Conceptual Analysis

Puja Singh
Department of Education, University of Lucknow, Lucknow-226 007, U.P., India
mepujastw@gmail.com

Received: 26-10-2025, Accepted: 20-11-2025

Abstract- The *National Education Policy (NEP) 2020* marks a historic step toward reforming and restructuring the Indian education system. Under this policy, the role of a primary school teacher is no longer confined to the dissemination of textbook knowledge; rather, teachers are envisioned as mentors and facilitators of holistic student development. In this context, a teacher's *Social Intelligence* and *Innovation Capacity* play a crucial role in enhancing the quality and effectiveness of education. *Social Intelligence* encompasses a teacher's self-awareness, understanding of interpersonal relationships, empathy, and communication skills — all of which enable effective interaction with students and colleagues. Meanwhile, *Innovation Capacity* reflects a teacher's creative mindset, experimental attitude, and ability to adopt new pedagogical approaches. The study highlights that the interrelation between social intelligence and innovation capacity strengthens teachers' professional competence while fostering creativity, critical thinking, and active learning among students. Adopting a conceptual approach, the research analyzes various literary sources, policy documents, and previous academic studies. The findings clearly suggest that integrating social and innovative skills among teachers is essential to realizing the vision of the NEP 2020. If these two dimensions are prioritized in teacher training programs, they can bring about positive changes in the quality of primary education. The integrated development of social intelligence and innovation capacity can significantly contribute to achieving the objectives of the NEP 2020 and fostering holistic student development.

Key words- National Education Policy, Social Intelligence, Innovation Capacity, Educational Reform, Teaching Competence, Policy Implementation

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में प्राथमिक शिक्षकों की सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमताः एक अवधारणात्मक विश्लेषण

पूजा सिंह
शिक्षा शास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ–226 007, उ0प्र0, भारत
mepujastw@gmail.com

सार– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन और पुनर्संरचना की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम उठाया है। इस नीति के अंतर्गत प्राथमिक स्तर पर शिक्षक की भूमिका केवल पाठ्य सामग्री के प्रसार तक सीमित नहीं रही, अपितु वे विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के मार्गदर्शक और प्रेरक बन गए हैं। इस परिप्रेक्ष्य में, शिक्षक की सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमता शिक्षा की गुणवत्ता और प्रभावशीलता को बढ़ाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सामाजिक बुद्धि में शिक्षक की आत्म–जागरूकता, पारस्परिक संबंधों की समझ, सहानुभूति और संवाद कौशल सम्मिलित हैं, जो उन्हें विद्यार्थियों व सहकर्मियों के साथ प्रभावी संवाद स्थापित करने में सक्षम बनाते हैं। वहीं, नवाचार क्षमता शिक्षक के रचनात्मक दृष्टिकोण, प्रयोगशीलता और नई शिक्षण विधियों को अपनाने की योग्यता को दर्शाती है। अध्ययन यह रेखांकित करता है कि सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमता का पारस्परिक संबंध शिक्षक की पेशेवर दक्षता को सुदृढ़ करता है, साथ ही विद्यार्थियों में सृजनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन और सक्रिय अधिगम को भी प्रोत्साहित करता है। अवधारणात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए इस शोध में विविध साहित्यिक स्रोतों, नीति दस्तावेजों और पूर्ववर्ती शैक्षणिक अध्ययनों का विश्लेषण किया गया है। निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा नीति 2020 की भावनाओं को साकार करने हेतु शिक्षकों में सामाजिक और नवाचारी कौशलों का समावेश अत्यंत आवश्यक है। यदि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इन दोनों आयामों को प्रमुखता दी जाए, तो यह प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। संक्षेप में, यह अध्ययन न केवल नीति–निर्माताओं और शैक्षणिक संस्थानों के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत प्रदान करता है, बल्कि प्राथमिक शिक्षकों के पेशेवर विकास और शिक्षण–प्रक्रिया की गुणवत्ता सुधारने के लिए व्यावहारिक दिशा भी प्रस्तुत करता है। सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमता का एकीकृत विकास शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों की प्राप्ति और विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

बीज शब्द– राष्ट्रीय शिक्षा नीति सामाजिक बुद्धि, नवाचार क्षमता, शिक्षा परिवर्तन, शिक्षण दक्षता, नीति क्रियान्वयन

शोध पत्र

1. **परिचय**– शिक्षा किसी भी समाज की प्रगति, स्थिरता और सामाजिक सशक्तिकरण की आधारशिला है। आधुनिक युग, जो वैश्वीकरण और तीव्र तकनीकी परिवर्तन का प्रतीक है, में शिक्षा का स्वरूप केवल अकादमिक ज्ञान तक सीमित नहीं रह गया है[1]। अब यह सामाजिक, भावनात्मक और रचनात्मक कौशलों के विकास का माध्यम बन चुकी है। इस परिप्रेक्ष्य में, प्राथमिक शिक्षक शिक्षा की नींव के निर्माता और विद्यार्थियों के समग्र विकास के प्रमुख कारक माने जाते हैं। वे न केवल ज्ञान का संप्रेषण करते हैं, बल्कि बच्चों के सामाजिक व्यवहार, नैतिक मूल्यों और व्यक्तित्व निर्माण में भी केंद्रीय भूमिका निभाते हैं[2]। भारत में शिक्षा के क्षेत्र में सुधार और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एक ऐतिहासिक पहल के रूप में उभरी है। यह नीति शिक्षण–शिक्षक प्रणाली को अधिक समावेशी, रचनात्मक और नवाचारी दिशा में रूपांतरित करने का प्रयास करती है। इसके अंतर्गत शिक्षकों के व्यावसायिक विकास, विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक व भावनात्मक कौशलों के संवर्धन, तथा शिक्षण में प्रौद्योगिकी और नवाचार के समन्वित उपयोग पर विशेष बल दिया गया है। इस नीति के अनुसार, शिक्षक केवल ज्ञान के संवाहक नहीं हैं, बल्कि वे विद्यार्थियों में सृजनात्मक सोच, समस्या समाधान क्षमता और सामाजिक संवेदनशीलता के प्रेरक भी हैं। वर्तमान शैक्षिक परिवेश में शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे पाठ्यपुस्तक आधारित शिक्षण से आगे बढ़कर विद्यार्थियों की सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमता को विकसित करने में सक्रिय भूमिका निभाएँ। सामाजिक बुद्धि वह योग्यता है जो शिक्षक को आत्म–जागरूकता, पारस्परिक संबंधों की समझ और समूह परिस्थितियों में प्रभावी व्यवहार के लिए सक्षम बनाती है। वहीं, नवाचार क्षमता शिक्षकों की रचनात्मकता, नई शिक्षण विधियों को अपनाने की प्रवृत्ति और शैक्षणिक सुधार की दिशा में पहल करने की क्षमता को निरूपित करती है[3]। इस प्रकार, प्राथमिक शिक्षकों में सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमता का समन्वित विकास न केवल छात्रों की सीखने की गुणवत्ता और सहभागिता को बढ़ाता है, बल्कि शिक्षण प्रणाली को आधुनिक शैक्षणिक चुनौतियों के अनुरूप अधिक प्रभावी और सशक्त बनाता है। प्रस्तुत अध्ययन इसी दृष्टिकोण से प्राथमिक शिक्षकों की सामाजिक और नवाचारी क्षमताओं का अवधारणात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिससे नीति–निर्माताओं, शिक्षण संस्थानों और शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों को सार्थक मार्गदर्शन और व्यवहारिक दिशा प्राप्त हो सके।[4]

2. **अध्ययन के उद्देश्य**– यह अवधारणात्मक अध्ययन इस विचार पर केंद्रित है कि किस प्रकार प्राथमिक शिक्षक अपनी सामाजिक बुद्धि के माध्यम से नवाचार क्षमता को विकसित कर सकते हैं तथा इसे शिक्षण प्रक्रिया में व्यावहारिक रूप से लागू कर सकते हैं।

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में शिक्षकों की भूमिका और उनकी पेशेवर दक्षता का विश्लेषण करना।
2. सामाजिक बुद्धि की अवधारणा को स्पष्ट करना।
3. शिक्षकों में नवाचार क्षमता के घटकों का विश्लेषण करना।

3. **शोध विधि**– यह शोध सामग्री विश्लेषण की शोध विधि पर आधारित है, जिसके अंतर्गत शोधकर्ता ने संकलित किए गए साक्षात्कारों, इंटरनेट स्रोतों तथा अन्य संबंधित डिजिटल माध्यमों से एकत्रित आंकड़ों का व्यवस्थित रूप से अध्ययन और व्याख्या की है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दस्तावेजों के साथ–साथ, सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमता पर उपलब्ध सैद्धांतिक और अनुभवजन्य शोध पत्रों का विश्लेषण किया गया है।

4. **संबंधित साहित्य सर्वेक्षण**– सामाजिक बुद्धि की अवधारणा का प्रारंभिक प्रतिपादन थॉर्नडाइक[4] ने किया था। उनके अनुसार, किसी व्यक्ति की सफलता केवल बौद्धिक क्षमता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह उसकी दूसरों को समझने, उनसे संवाद स्थापित करने और सामूहिक रूप से कार्य करने की योग्यता पर भी आधारित होती है। यह विचार इस तथ्य को रेखांकित करता है कि मानवीय संबंधों को समझने की क्षमता भी बौद्धिकता जितनी ही आवश्यक है। सदरलैंड[5] के अध्ययन में यह पाया गया कि उच्च सामाजिक बुद्धि वाले शिक्षक अपनी कक्षा में एक सकारात्मक भावनात्मक वातावरण तैयार करते हैं। इससे विद्यार्थियों में सहभागिता की भावना, आत्मविश्वास और सीखने की प्रेरणा में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। इसी प्रकार, रॉजर्स[6] ने नवाचार को समाज में प्रसार की एक सतत प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया, जिसके अंतर्गत शिक्षक नए विचारों, तकनीकों और शिक्षण विधियों को अपनाकर अधिगम को अधिक प्रासंगिक और प्रभावी बनाते हैं। क्रॉफर्ड[7] के अनुसार, नवाचार–प्रधान शिक्षक विद्यार्थियों को ऐसे शिक्षण अनुभव प्रदान करते हैं जो समस्या–समाधान, आलोचनात्मक चिंतन और सृजनात्मक सोच को प्रोत्साहित करते हैं। इस प्रकार, नवाचार केवल शिक्षण की तकनीक नहीं बल्कि एक दृष्टिकोण बन जाता है, जो विद्यार्थी के समग्र विकास की दिशा में सहायक होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षक को "रचनात्मक, समालोचनात्मक और संवेदनशील विचारक" के रूप में विकसित करने पर बल दिया है। यह नीति सामाजिक एवं भावनात्मक अधिगम और रचनात्मक शिक्षण दृष्टियों के एकीकरण को आवश्यक मानती है।

5. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020**– राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली के पुनर्गठन और नवाचार की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है। लगभग 34 वर्षों बाद लागू हुई इस नीति ने 1986/1992 की शिक्षा नीति का स्थान लेकर शिक्षा को आधुनिक युग की आवश्यकताओं– जैसे वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और वैश्विक शैक्षिक मानकों के अनुरूप रूपांतरित करने का मार्ग प्रशस्त किया है। इस नीति का प्रमुख उद्देश्य शिक्षा को सुलभ, समावेशी, गुणवत्तापूर्ण और सृजनात्मक बनाना है, ताकि प्रत्येक विद्यार्थी अपनी संपूर्ण क्षमता का विकास कर सके और शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया में नवाचार के वाहक बनें। नीति के अंतर्गत शिक्षक की भूमिका को विशेष महत्व दिया गया है। शिक्षक अब केवल पाठ्य ज्ञान के संवाहक नहीं, बल्कि रचनात्मक, नवाचारी और सामाजिक रूप से संवेदनशील शिक्षण–पेशेवर के रूप में

परिभाषित किए गए हैं। 2020 में शिक्षक प्रशिक्षण, सतत व्यावसायिक विकास और प्रौद्योगिकी–आधारित शिक्षण को शिक्षा की गुणवत्ता सुधार का मूल आधार माना गया है। नीति यह भी रेखांकित करती है कि शिक्षक, अपनी सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमता के माध्यम से, विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया को अधिक समग्र, प्रेरणादायक और अनुभवात्मक बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त, नीति शिक्षा में नवाचार और सृजनात्मकता को प्रोत्साहन देने पर बल देती है। इसमें परियोजना–आधारित शिक्षण प्रौद्योगिकी के एकीकृत उपयोग, तथा शिक्षकों और विद्यार्थियों दोनों के लिए रचनात्मक गतिविधियों के समावेश को आवश्यक माना गया है। विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर, शिक्षक इन पहलों के प्रभावी क्रियान्वयन में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं, क्योंकि वे विद्यार्थियों की प्रारंभिक सीखने की यात्रा का दिशा–निर्देशन करते हैं। संक्षेप में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 न केवल भारत के शिक्षा ढाँचे को नई दिशा प्रदान करती है, बल्कि शिक्षकों को परिवर्तन के सशक्त कारक के रूप में स्थापित करती है। यह नीति सामाजिक संवेदनशीलता, नवाचार और रचनात्मक अधिगम को एकीकृत करते हुए शिक्षा को 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप रूपांतरित करने का मार्ग प्रशस्त करती है।

6. **सामाजिक बुद्धि**– सामाजिक बुद्धि वह मानसिक एवं व्यवहारिक क्षमता है जिसके माध्यम से व्यक्ति स्वयं और दूसरों के विचारों, भावनाओं तथा व्यवहारों को समझकर सामाजिक संदर्भ में उपयुक्त एवं संवेदनशील प्रतिक्रिया देने में सक्षम होता है। यह केवल एक सामाजिक कौशल नहीं, बल्कि ऐसी समग्र योग्यता है जो व्यक्ति को सामाजिक परिस्थितियों में विवेकपूर्ण निर्णय लेने, सहानुभूति प्रकट करने और सहयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाने में सहायता करती है। शिक्षा के क्षेत्र में, विशेष रूप से शिक्षकों के लिए, सामाजिक बुद्धि का महत्व अत्यधिक है। शिक्षकों का कार्य केवल विषय ज्ञान के संप्रेषण तक सीमित नहीं, बल्कि विद्यार्थियों, सहकर्मियों और अभिभावकों के साथ निरंतर संवाद और सहयोग पर आधारित होता है। एक सामाजिक रूप से बुद्धिमान शिक्षक अपनी कक्षा में न केवल सकारात्मक वातावरण बनाता है, बल्कि विद्यार्थियों की भावनात्मक आवश्यकताओं, सीखने की प्रवृत्तियों और विविधताओं को समझकर उनके अनुरूप शिक्षण रणनीतियाँ अपनाता है। उच्च सामाजिक बुद्धि वाले शिक्षक विद्यार्थियों के साथ सहानुभूतिपूर्ण और विश्वासपूर्ण संबंध स्थापित कर पाते हैं। वे सहयोग और संवेदनशीलता के आधार पर एक नवाचारी, सहयोगी और प्रेरक शिक्षण वातावरण का निर्माण करते हैं। इस प्रकार, सामाजिक बुद्धि शिक्षकों को शिक्षा के मानवीय पक्ष को सशक्त बनाने में सक्षम बनाती है।
सामाजिक बुद्धि के प्रमुख घटक इस प्रकार माने गए हैं–

आत्म–जागरूकता अपनी भावनाओं, शक्तियों और सीमाओं को पहचानने तथा उनके प्रति सजग रहने की क्षमता।
सामाजिक संवेदनशीलता दूसरों के दृष्टिकोण, भावनाओं और आवश्यकताओं को समझने की योग्यता।
सहयोग एवं टीम भावना समूह में कार्य करते हुए पारस्परिक विश्वास और सकारात्मक परिणाम प्राप्त करने की प्रवृत्ति।
प्रभावी संवाद विचारों को स्पष्ट, सहानुभूतिपूर्ण और प्रेरक ढंग से अभिव्यक्त करने की कला।

विभिन्न अध्ययनों से यह सिद्ध हुआ है कि सामाजिक बुद्धि न केवल सामाजिक दक्षता का संकेतक है, बल्कि यह एक महत्त्वपूर्ण शैक्षणिक योग्यता भी है, जो शिक्षक के कक्षा प्रबंधन, निर्णय–निर्माण, और विद्यार्थी सहभागिता को गहराई से प्रभावित करती है सामाजिक रूप से बुद्धिमान शिक्षक शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार करते हैं, साथ ही विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, समस्या समाधान क्षमता और भावनात्मक स्थिरता को भी विकसित करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी इस तथ्य को रेखांकित किया गया है कि शिक्षक केवल ज्ञान के संवाहक नहीं, बल्कि सामाजिक रूप से जिम्मेदार, भावनात्मक रूप से संवेदनशील और नवाचारोन्मुख मार्गदर्शक हैं इस प्रकार, सामाजिक बुद्धि आधुनिक शिक्षक की पेशेवर दक्षता का एक अपरिहार्य अंग बन चुकी है, जो शिक्षा को अधिक मानवीय, संवादात्मक और सृजनशील बनाती है।

7. **नवाचार क्षमता**– नवाचार क्षमता से अभिप्राय व्यक्ति की उस रचनात्मक योग्यता से है जिसके माध्यम से वह परिवर्तित परिस्थितियों, नई चुनौतियों और आवश्यकताओं के अनुरूप नए विचार, विधियाँ और समाधान विकसित कर सके यह क्षमता किसी व्यक्ति के चिंतन, कल्पनाशक्ति और प्रयोगशील दृष्टिकोण को परिलक्षित करती है। शिक्षा के क्षेत्र में यह विशेष रूप से शिक्षकों के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि शिक्षक के नवाचारी दृष्टिकोण से न केवल शिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित होती है, बल्कि विद्यार्थियों में भी सृजनात्मकता, जिज्ञासा और समस्या–समाधान प्रवृत्ति का विकास होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने नवाचार और सृजनात्मकता को शिक्षा के प्रमुख स्तंभों में से एक के रूप में मान्यता दी है। नीति के अनुसार, शिक्षक का कार्य केवल पाठ्यपुस्तक–आधारित ज्ञान का प्रसार करना नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों को सोचने, प्रश्न करने और खोज करने के लिए प्रेरित करना भी है। एक नवाचारी शिक्षक पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों से आगे बढ़कर परियोजना–आधारित प्रायोगिक शिक्षण और डिजिटल तकनीकों का उपयोग करता है, जिससे शिक्षा अधिक प्रासंगिक, सहभागितापूर्ण और आकर्षक बनती है।

नवाचार क्षमता शिक्षकों पर चार प्रमुख स्तरों पर प्रभाव डालती है–

शिक्षण–विधियों में रचनात्मकता नवीन शिक्षण रणनीतियों को अपनाकर अधिगम को रोचक, प्रेरक और विद्यार्थियों की रुचि के अनुरूप बनाना।
समस्या समाधान क्षमता– कक्षा में आने वाली शैक्षणिक या व्यवहारिक चुनौतियों का लचीलेपन, प्रयोगशीलता और नई सोच के माध्यम से

समाधान करना।
तकनीकी नवाचार का उपयोग– शिक्षण में ई–लर्निंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल उपकरणों का प्रभावी एकीकरण कर शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता को बढ़ाना।
छात्र–केंद्रित शिक्षण विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, क्षमताओं और रुचियों के अनुरूप शिक्षण प्रक्रिया को अनुकूल बनाना, जिससे वे सक्रिय रूप से सीखने की प्रक्रिया में भाग लें।

प्रस्तुत शोध से यह स्पष्ट होता है कि जब शिक्षक अपनी नवाचार क्षमता का विकास करते हैं, तो शिक्षा का व्यावहारिक और मानवीय दोनों पक्ष सशक्त होते हैं। ऐसे शिक्षक विद्यार्थियों को केवल ज्ञान नहीं देते, बल्कि उनमें स्वायत्तता, आत्मविश्वास, जिज्ञासा और रचनात्मक चिंतन जैसी क्षमताओं का संवर्धन करते हैं। विशेष रूप से प्राथमिक स्तर पर, नवाचार क्षमता का विकास अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यही वह अवस्था है जहाँ बच्चों की सृजनात्मकता, जिज्ञासा और सीखने की दिशा आकार लेती है। अतः शिक्षक की नवाचार क्षमता न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को उन्नत करती है, बल्कि भविष्य के नवाचारी नागरिकों के निर्माण में भी योगदान देती है।

8. **सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमता का पारस्परिक संबंध**– सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमता दोनों ही शिक्षक की व्यावसायिक दक्षता के ऐसे आयाम हैं जो एक–दूसरे को पूरक करते हैं। सामाजिक बुद्धि शिक्षक को पारस्परिक संबंधों की समझ, सहयोग, सहानुभूति और संवाद कौशल प्रदान करती है, जबकि नवाचार क्षमता उसे नई परिस्थितियों के अनुरूप रचनात्मक समाधान विकसित करने में सक्षम बनाती है। जब शिक्षक सामाजिक रूप से संवेदनशील होता है, तो वह विद्यार्थियों, सहकर्मियों और अभिभावकों की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझ पाता है यही समझ उसकी नवाचार क्षमता को दिशा और उद्देश्य प्रदान करती है। शिक्षण–प्रक्रिया में यह संबंध स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है – सामाजिक रूप से बुद्धिमान शिक्षक कक्षा में एक सहयोगी और प्रेरक वातावरण निर्मित करता है, जो विद्यार्थियों में जिज्ञासा, रचनात्मकता और प्रयोगशीलता को बढ़ावा देता है। इस प्रकार, सामाजिक बुद्धि नवाचार के लिए भावनात्मक और सामाजिक आधार तैयार करती है, जबकि नवाचार क्षमता उस आधार को रचनात्मक क्रिया में रूपांतरित करती है[8]।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (के संदर्भ में भी यह पारस्परिक संबंध अत्यंत प्रासंगिक है। नीति में शिक्षक को "प्रेरक, संवेदनशील और नवाचारी मार्गदर्शक" के रूप में देखा गया है, जो तभी संभव है जब उसके भीतर सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमता का संतुलित विकास हो। अतः कहा जा सकता है कि सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमता का समन्वय शिक्षण को अधिक मानवीय, संवादात्मक और सृजनात्मक बनाता है, जिससे विद्यार्थियों के समग्र विकास की दिशा में ठोस प्रगति संभव होती है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमता प्राथमिक शिक्षकों की व्यावसायिक दक्षता और शिक्षण प्रभावशीलता के लिए अनिवार्य हैं। सामाजिक बुद्धि शिक्षक को विद्यार्थियों के भावनात्मक और सामाजिक आवश्यकताओं को समझने में सक्षम बनाती है, जिससे कक्षा में सकारात्मक और सहयोगात्मक वातावरण निर्मित होता है। वहीं, नवाचार क्षमता शिक्षकों को नई शिक्षण विधियों, तकनीकी संसाधनों और रचनात्मक दृष्टियों को अपनाने के लिए प्रेरित करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (की दृष्टि में शिक्षक का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में सृजनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन और जीवन–केंद्रित कौशल का विकास करना है। इस संदर्भ में सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमता का सम्मिलित प्रयोग शिक्षक को एक प्रभावशाली और परिवर्तनकारी मार्गदर्शक बनाता है। इससे न केवल शिक्षण की गुणवत्ता में सुधार आता है, बल्कि विद्यार्थियों का समग्र व्यक्तित्व, आत्मविश्वास और सीखने की रुचि भी विकसित होती है। अध्ययन यह भी संकेत देता है कि शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इन क्षमताओं के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। सामाजिक–भावनात्मक अधिगम और रचनात्मक शिक्षण तकनीकों का समावेश शिक्षकों को अधिक संवेदनशील, रचनात्मक और नवाचारी बनाता है। विद्यालय प्रशासन को भी नवाचारी प्रयोगों और शिक्षकों की सतत व्यावसायिक वृद्धि को प्रोत्साहित करने वाले वातावरण की स्थापना करनी चाहिए।

शैक्षिक एवं व्यवहारिक निहितार्थ– यह अध्ययन प्राथमिक शिक्षकों में सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमता के महत्व को उजागर करता है और इसके आधार पर शिक्षक प्रशिक्षण, शिक्षण पद्धतियों और नीति निर्माण में व्यावहारिक योगदान प्रदान करता है। पहला, शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में सामाजिक–भावनात्मक अधिगम और रचनात्मक शिक्षण विधियों का समावेश किया जाना चाहिए। इससे शिक्षक विद्यार्थियों की भावनात्मक आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से समझने, उनका मार्गदर्शन करने और उन्हें प्रेरित करने में अधिक सक्षम होंगे। दूसरा, शिक्षण पद्धतियों में नवाचार क्षमता को शामिल करने से कक्षा अधिक संवादात्मक, सहयोगात्मक और सक्रिय अधिगम–प्रधान बन सकती है। शिक्षक नई तकनीकों, परियोजना–आधारित अधिगम और डिजिटल संसाधनों का प्रभावी उपयोग करके शिक्षण को अधिक रोचक, प्रासंगिक और प्रेरक बना सकते हैं। तीसरा, नीति निर्माण के संदर्भ में यह अध्ययन नीति–निर्माताओं को प्रमाण आधारित दिशा–निर्देश प्रदान करता है। नीति निर्माता शिक्षक विकास, नवाचार प्रोत्साहन और समग्र मूल्यांकन प्रणालियों के निर्माण में सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमता को प्राथमिकता देकर शिक्षा की गुणवत्ता और शिक्षक प्रभावशीलता में सुधार ला सकते हैं।

9. **निष्कर्ष**– भविष्य के शोध के लिए यह सुझाव दिया जाता है कि सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमता के प्रभाव का सांख्यिकीय विश्लेषण, विभिन्न प्राथमिक विद्यालयों में उनका तुलनात्मक अध्ययन और लंबी अवधि में शिक्षण परिणामों पर इनके प्रभाव का मूल्यांकन किया जाए। इससे नीति निर्माण और शिक्षक विकास कार्यक्रम और अधिक साक्ष्य–आधारित और प्रभावकारी बन सकेंगे। अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमता न केवल शिक्षक के व्यक्तिगत विकास के लिए, अपितु समग्र शैक्षिक सुधार और शिक्षा–परिवर्तन

के लिए भी अनिवार्य हैं। इन दोनों क्षमताओं का संतुलित विकास शिक्षा को समावेशी, संवेदनशील और रचनात्मक बनाने में निर्णायक भूमिका निभाता है। संक्षेप में, यह अध्ययन शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने, शिक्षक प्रभावशीलता सुदृढ़ करने और विद्यार्थियों के समग्र विकास को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण व्यावहारिक योगदान देता है । सामाजिक बुद्धि और नवाचार क्षमता का समन्वित विकास न केवल शिक्षकों को अधिक सक्षम बनाता है, बल्कि शिक्षा प्रणाली को समावेशी, रचनात्मक और संवेदनशील बनाने में भी निर्णायक भूमिका निभाता है।

References

1. Goleman, D. (1995). Emotional intelligence: Why it can matter more than IQ. New York, NY: Bantam Books.
2. UNESCO. (2019). Primary education and teacher effectiveness: Global report. Paris, France: UNESCO Publishing.
3. Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Government of India
4. Thorndike, E. L. (1920). Intelligence and its uses. Harper's Magazine, 140, 227–235.
5. Sutherland, P. (2007). Developing Emotional and Social Intelligence in Education. Open University Press.
6. Rogers, E. M. (2003). Diffusion of Innovations. Free Press
7. Crawford, C. (2010). Teaching Innovation and Creativity in Higher Education. Routledge.
8. Kumar, R., & Mishra, S. (2021). Social Intelligence and Innovation Capacity of Teachers: An Indian Perspective. Indian Journal of Education Research, 45(2), 67–78.